Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 6

भक्ति-सूफी परंपराएँ

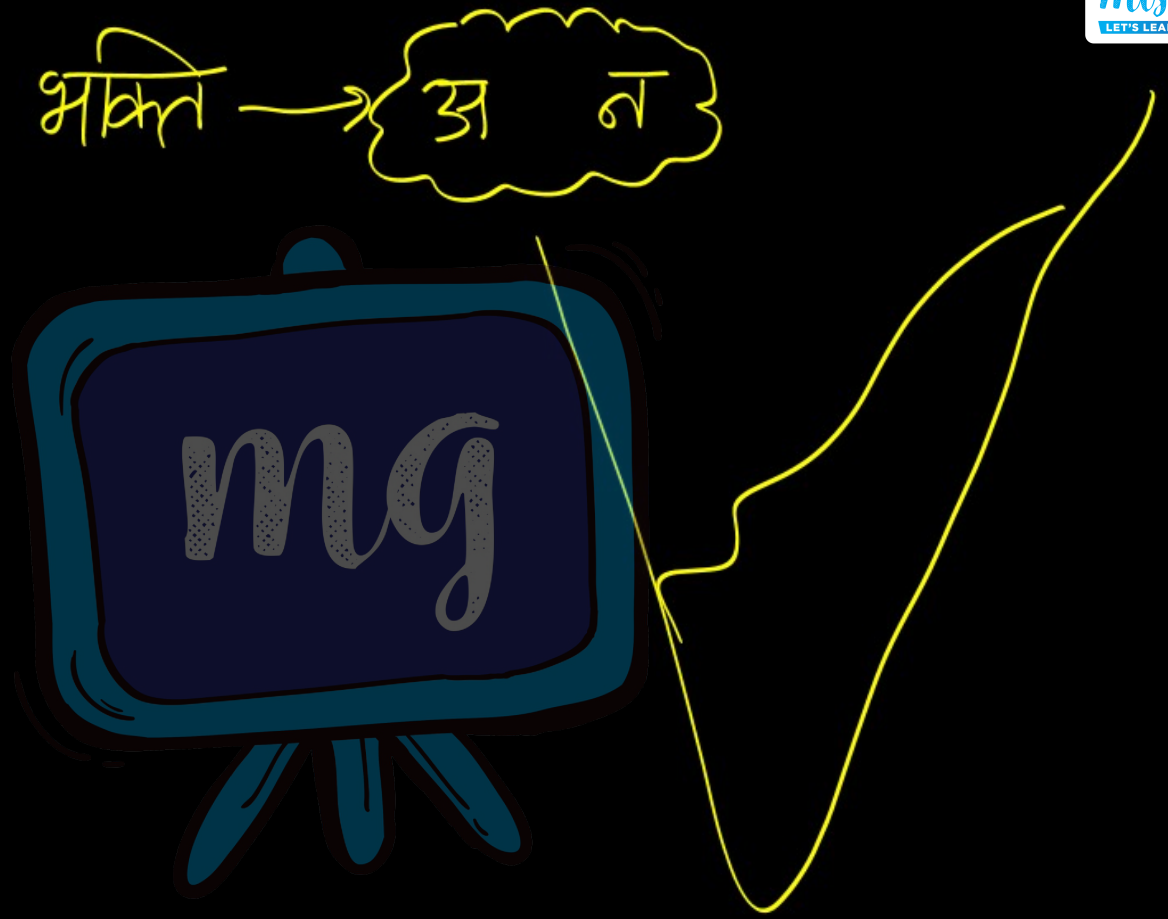
भाग - 4

प्रीतेश जोशी



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

विष्णु → वैष्णव
शिव → शैव

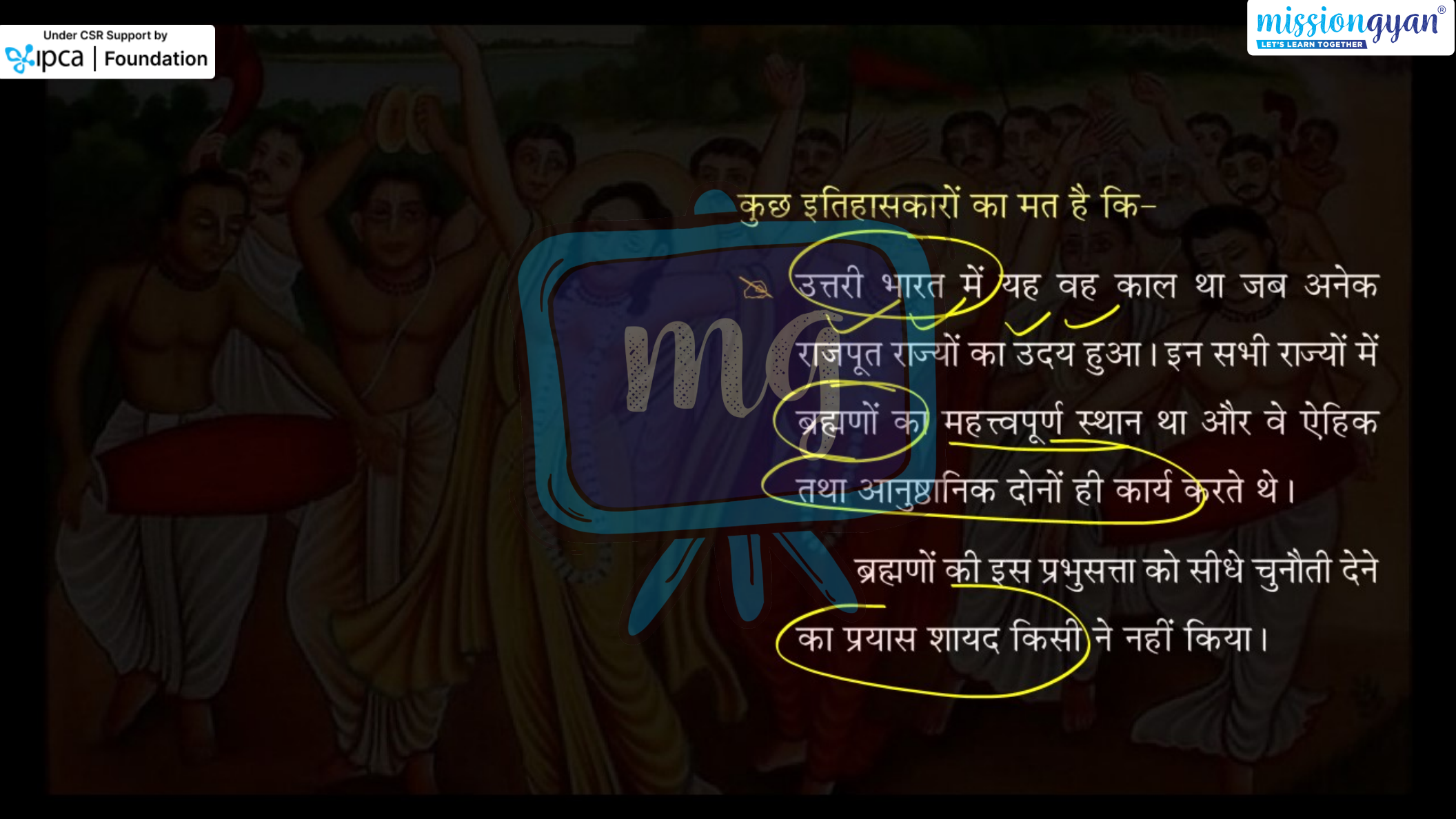
उत्तरी भारत में धार्मिक उफान

- 14 वीं शताब्दी तक उत्तरी भारत में अलवार और नयनार संतों की रचनाओं जैसा कोई ग्रन्थ प्राप्त नहीं हुआ।
- हालांकि उत्तरी भारत में भी विष्णु और शिव जैसे देवताओं की उपासना मंदिरों में की जाती थी।

➤ **इस भिन्नता की क्या वजह हो सकती है ?**

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



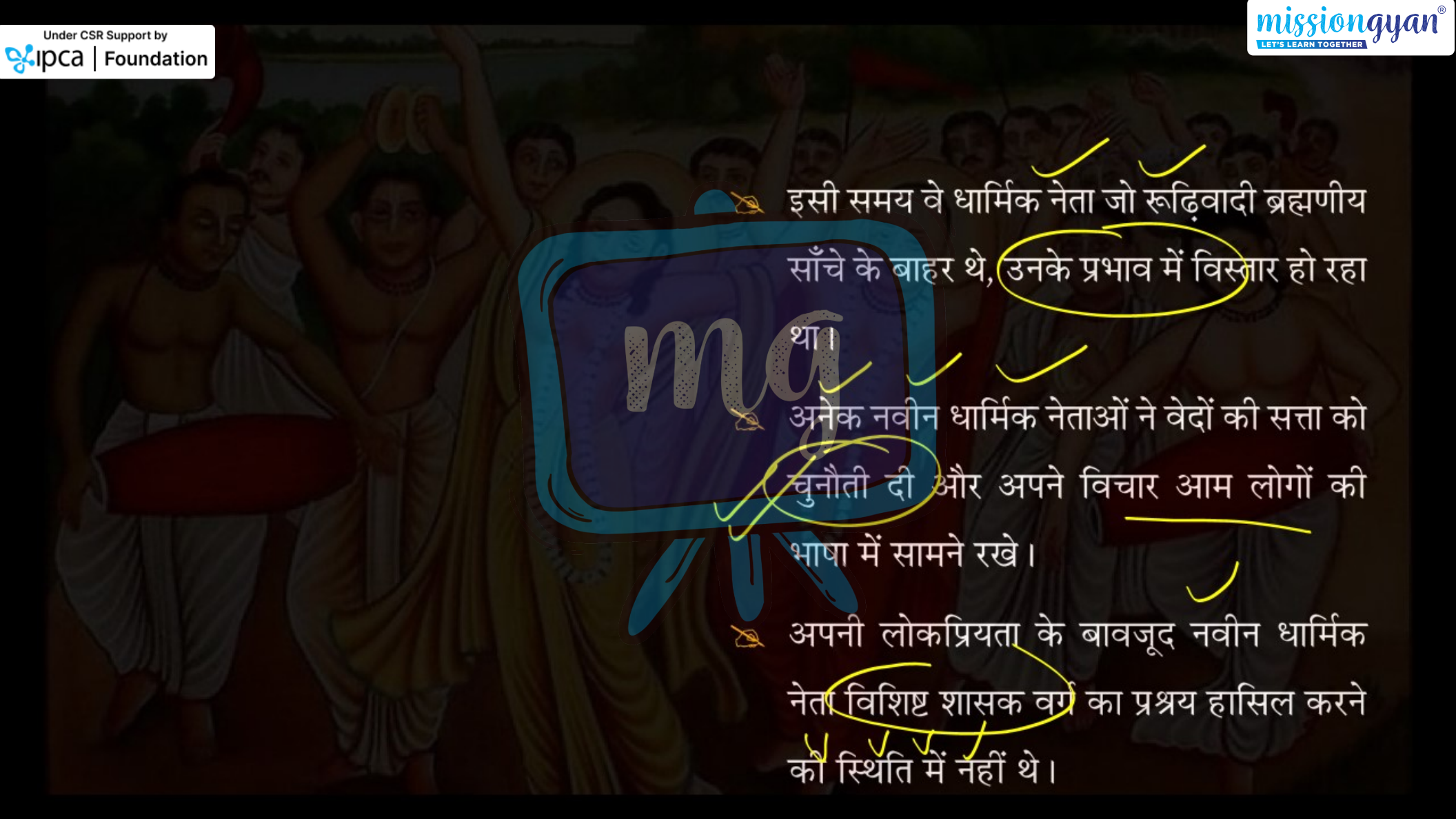
कुछ इतिहासकारों का मत है कि-

- उत्तरी भारत में यह वह काल था जब अनेक राजपूत राज्यों का उदय हुआ। इन सभी राज्यों में ब्रह्मणों का महत्त्वपूर्ण स्थान था और वे ऐहिक तथा आनुष्ठानिक दोनों ही कार्य करते थे।

ब्रह्मणों की इस प्रभुसत्ता को सीधे चुनौती देने का प्रयास शायद किसी ने नहीं किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

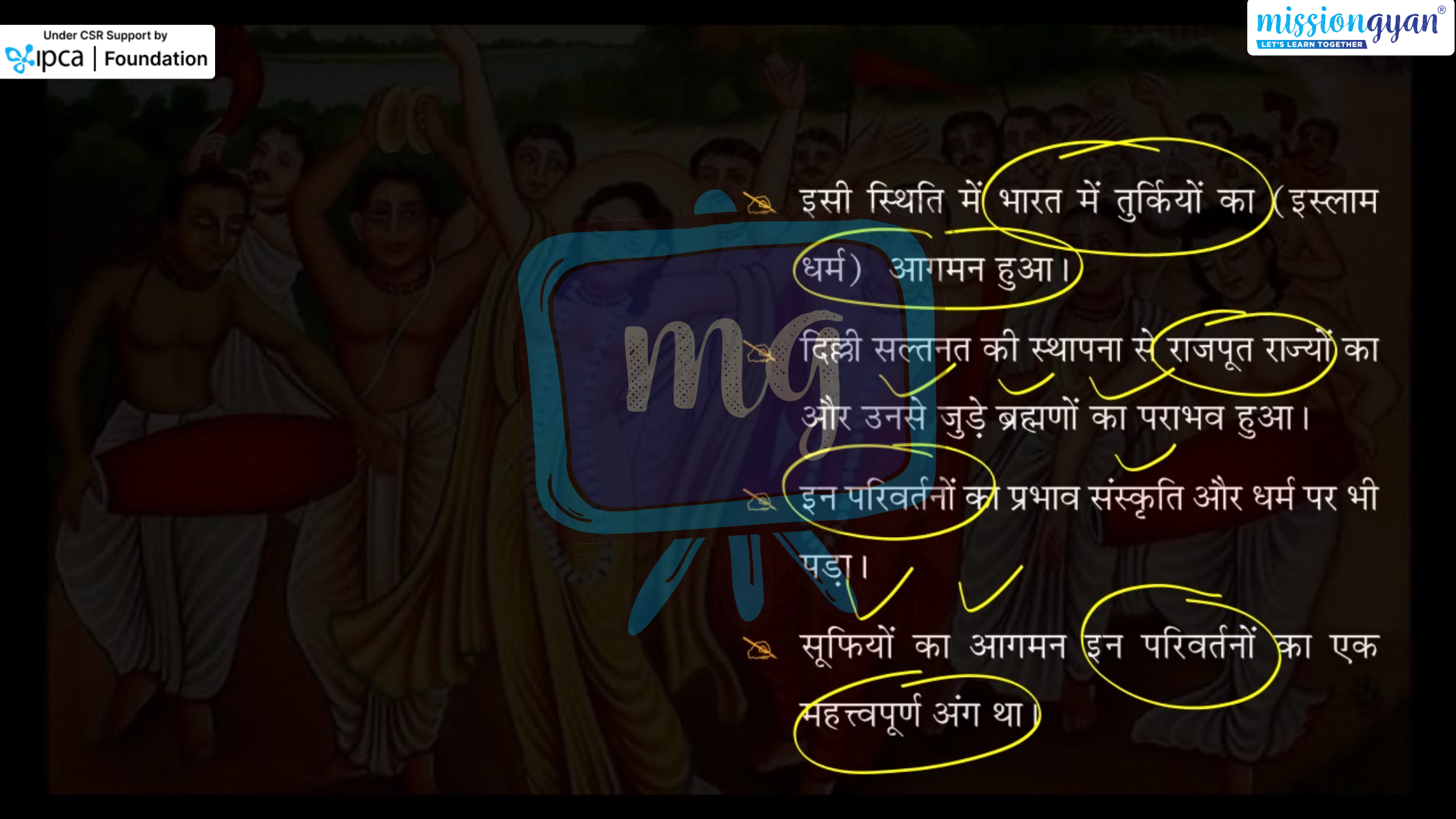
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- इसी समय वे धार्मिक नेता जो रूढ़िवादी ब्रह्मणीय साँचे के बाहर थे, उनके प्रभाव में विस्तार हो रहा था।
- अनेक नवीन धार्मिक नेताओं ने वेदों की सत्ता को चुनौती दी और अपने विचार आम लोगों की भाषा में सामने रखे।
- अपनी लोकप्रियता के बावजूद नवीन धार्मिक नेता विशिष्ट शासक वर्ग का प्रश्रय हासिल करने की स्थिति में नहीं थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

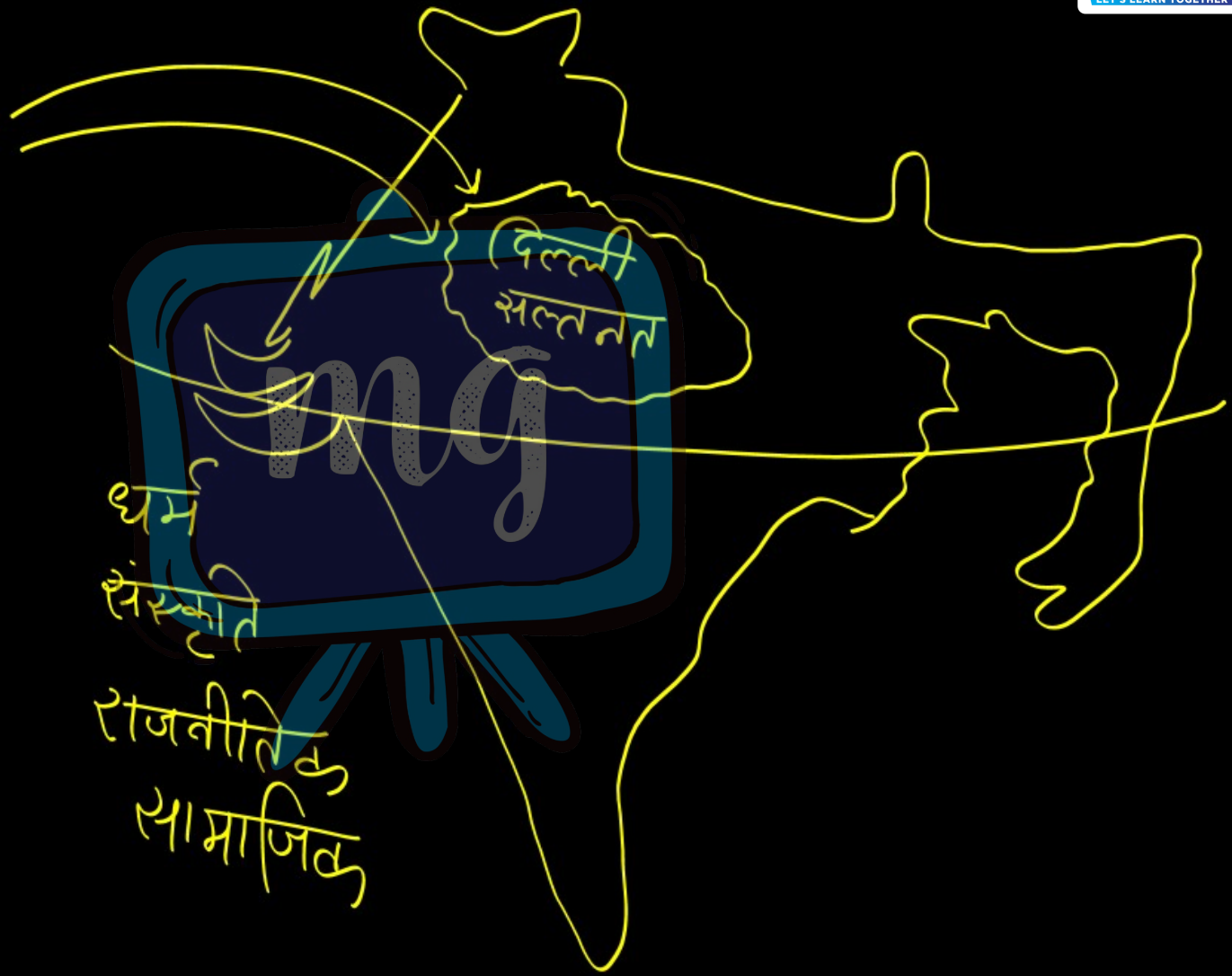
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- इसी स्थिति में भारत में तुर्कियों का (इस्लाम धर्म) आगमन हुआ।
- दिल्ली सल्तनत की स्थापना से राजपूत राज्यों का और उनसे जुड़े ब्रह्मणों का पराभव हुआ।
- इन परिवर्तनों का प्रभाव संस्कृति और धर्म पर भी पड़ा।
- सूफियों का आगमन इन परिवर्तनों का एक महत्त्वपूर्ण अंग था।

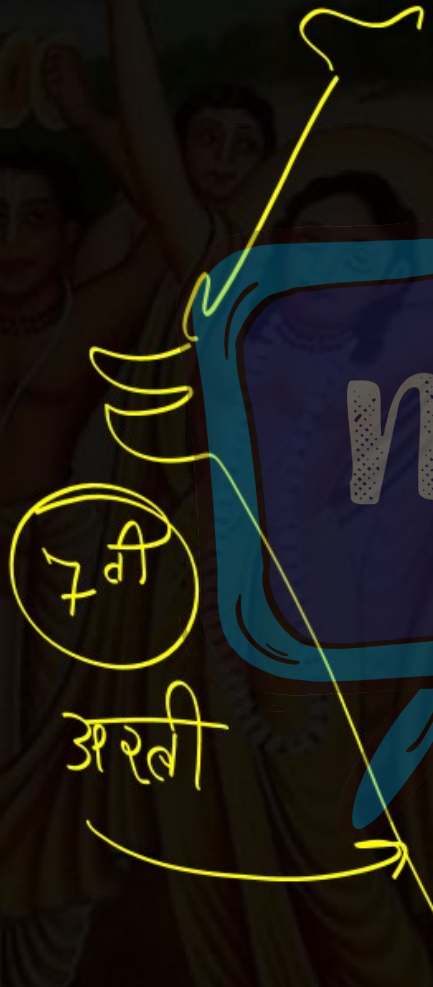
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

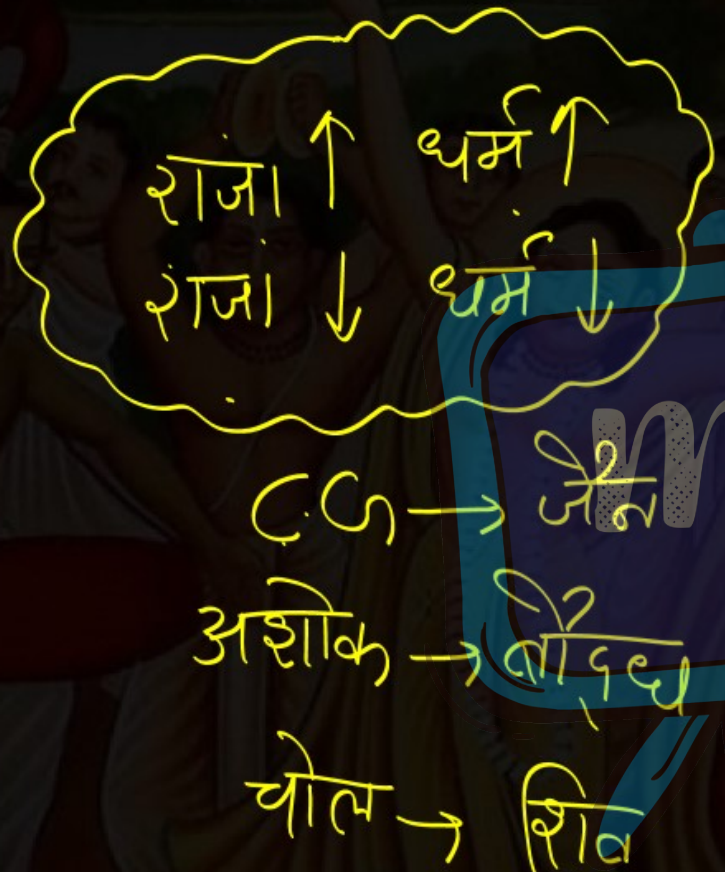


दुशाले के नए ताने-बाने: इस्लामी परंपराएँ

- प्रथम सहस्त्राब्दी ईसवी में अरब व्यापारी समुद्र के रास्ते पश्चिमी भारत के बंदरगाहों तक आए।
- इसी समय मध्य ऐशिया से लोग देश के उत्तर-पश्चिम प्रांतों में आकर बस गए।
- 7 वीं शताब्दी में इस्लाम के उद्भव के बाद में यह क्षेत्र इस्लामी विश्व का हिस्सा बन गए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



शासकों और शासितों के धार्मिक विश्वास

- 711 ईसवीं में मुहम्मद बिन कासिम नाम के अरब सेनापति ने सिंध को विजित कर लिया।
- बाद में तुर्क और अफगानों ने दिल्ली सल्तनत की नींव रखी। → 1206
- समय के साथ दक्कन और अन्य भागों में भी सल्तनत की सीमा का प्रसार हुआ।
- इन क्षेत्रों में इस्लाम शासकों का स्वीकृत धर्म था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

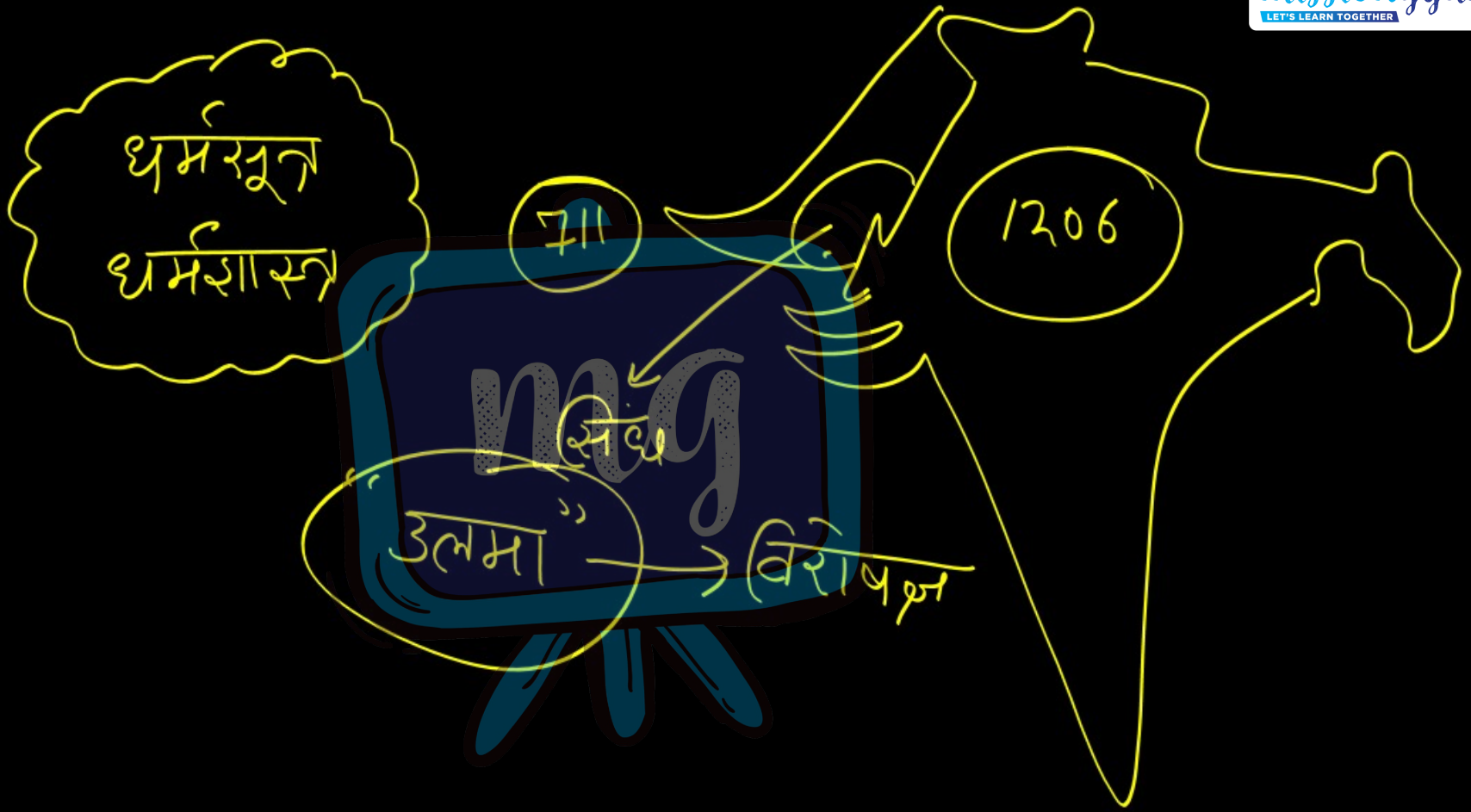
- मुसलमान शासकों को उलमा के मार्गदर्शन पर चलना होता था।

उलमा :- इस्लाम धर्म के ज्ञाता थे।

- शासन के धार्मिक व कानूनी और अध्यापन संबंधी जिम्मेदारी निभाते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

शरिया

शरिया

शरिया मुसलमान समुदाय को निर्देशित करने वाला कानून है। यह कुरान शरीफ़ और हदीस पर आधारित है। हदीस का अर्थ है पैगम्बर साहब से जुड़ी परंपराएँ जिनके अंतर्गत उनके स्मृत शब्द और क्रियाकलाप भी आते हैं।

जब अरब क्षेत्र से बाहर इस्लाम का प्रसार हुआ जहाँ के आचार-व्यवहार भिन्न थे तो क़ियास (सदृशता के आधार पर तर्क) और

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

इजमा (समुदाय की सहमति) को भी कानून का स्रोत माना जाने लगा। इस तरह शरिया, कुरान, हदीस, क़ियास और इजमा से उद्भूत हुआ।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

राज्य → सुल्तान
प्रजा → हिन्दू, जैन, बौद्ध
कानून

- उलमा से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे शासन में शरिया का अमल (पालन) सुनिश्चित करवाएँगे।
- किंतु भारतीय उपमहाद्वीप में स्थिति जटिल थी क्योंकि यहाँ बड़ी जनसंख्या इस्लाम धर्म को मानने वाली नहीं थी।
- इस प्रकार जिम्मी अर्थात् संरक्षित श्रेणी का प्रादुर्भाव हुआ।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

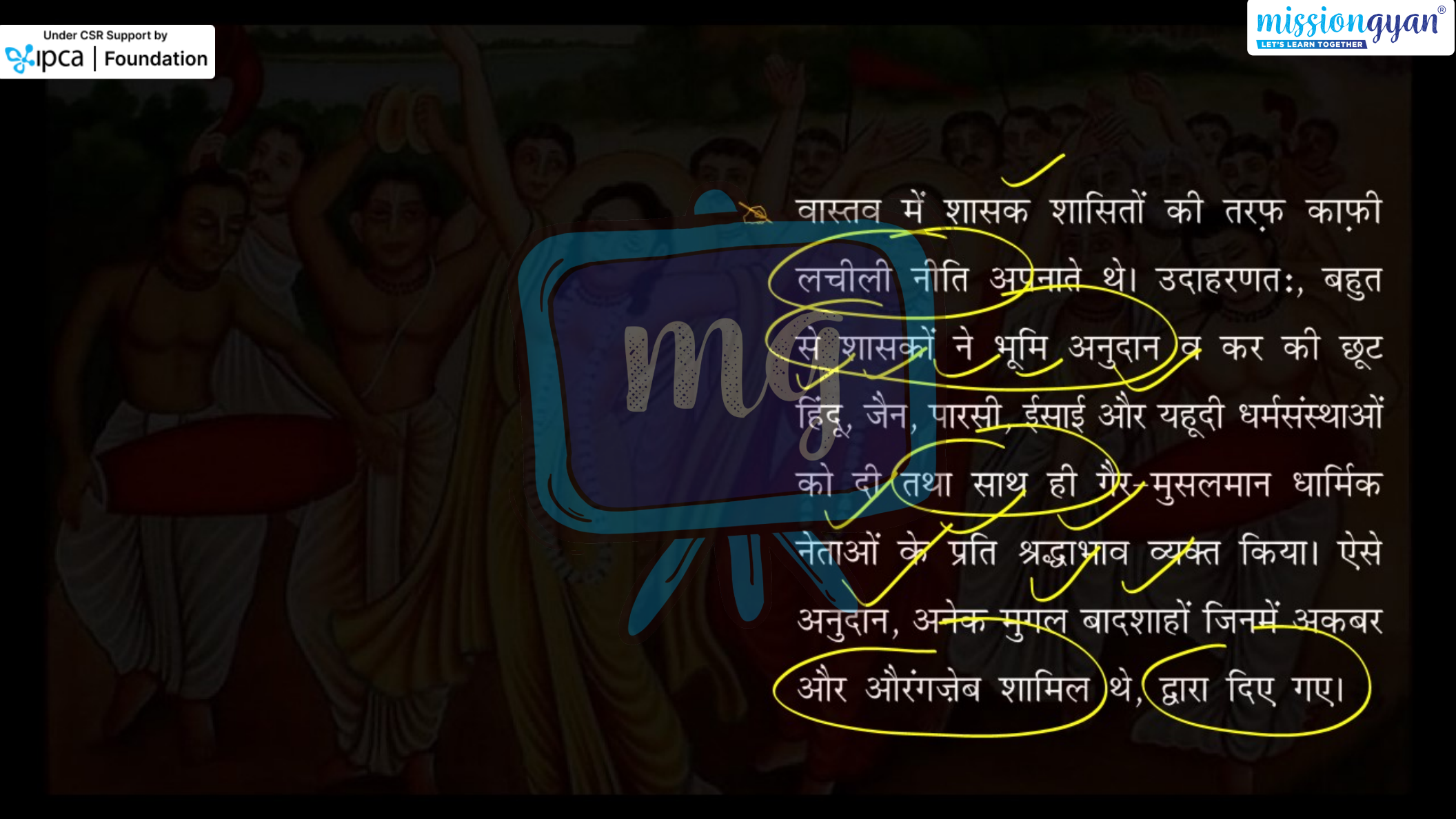
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



जिम्मी :- जिम्मी वे लोग थे जो उद्घटित धर्मग्रन्थ को मानते थे जैसे इस्लामी शासकों के क्षेत्र में रहने वाले यहूदी और ईसाई। ये लोग जजिया नामक कर चुका कर मुसलमान शासकों द्वारा संरक्षण दिये जाने के अधिकारी हो जाते थे। भारत में इसके अन्तर्गत हिन्दूओं को भी शामिल कर लिया गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



वास्तव में शासक शासितों की तरफ़ काफ़ी लचीली नीति अपनाते थे। उदाहरणत:, बहुत से शासकों ने भूमि अनुदान व कर की छूट हिंदू, जैन, पारसी, ईसाई और यहूदी धर्मसंस्थाओं को दी तथा साथ ही गैर-मुसलमान धार्मिक नेताओं के प्रति श्रद्धाभाव व्यक्त किया। ऐसे अनुदान, अनेक मुग़ल बादशाहों जिनमें अकबर और औरंगज़ेब शामिल थे, द्वारा दिए गए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

CBSE ✓
RBSE
अन्य
1
2

खम्बात का गिरजाघर

यह उद्धरण उस फ़रमान (बादशाह के हुक्मनामे) का अंश है जिसे 1598 में अकबर ने जारी किया :

हमारे बुलंद और मुकद्दस (पवित्र) ज़ेहन में पहुँचा है कि यीशु की मुकद्दस जमात के पादरी खम्बायत गुजरात के शहर में इबादत के लिए (गिरजाघर) एक इमारत की तामीर (निर्माण) करना चाहते हैं;

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

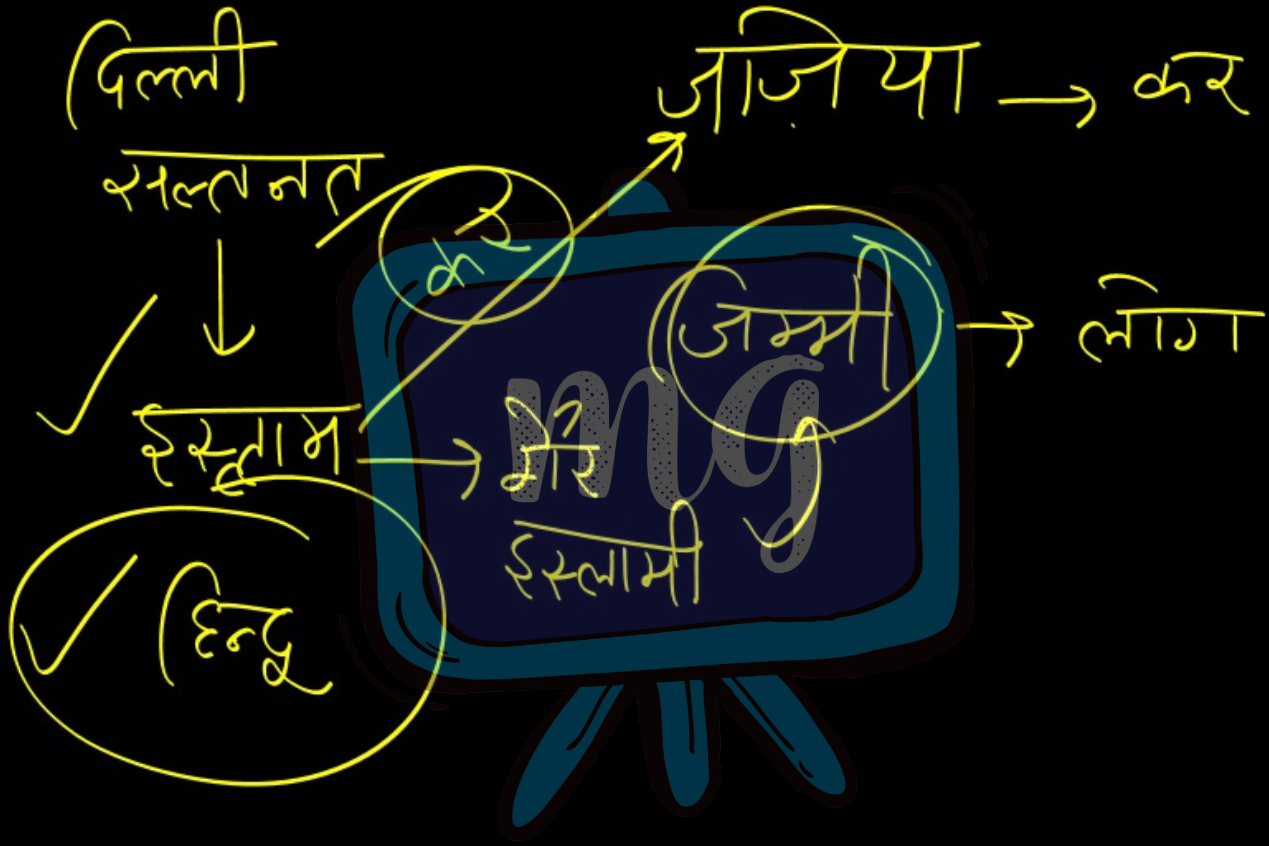
गुजरात

अकबर

इसलिए यह शाही फ़रमान... जारी किया जा रहा है.... खम्बायत के महानुभाव किसी भी तरह उनके रास्ते में न आएँ और उन्हें गिरजाघर की तामीर करने दें जिससे वे अपनी इबादत कर सकें। यह ज़रूरी है कि बादशाह के इस फ़रमान की हर तरह से तामील (पालन) हो।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

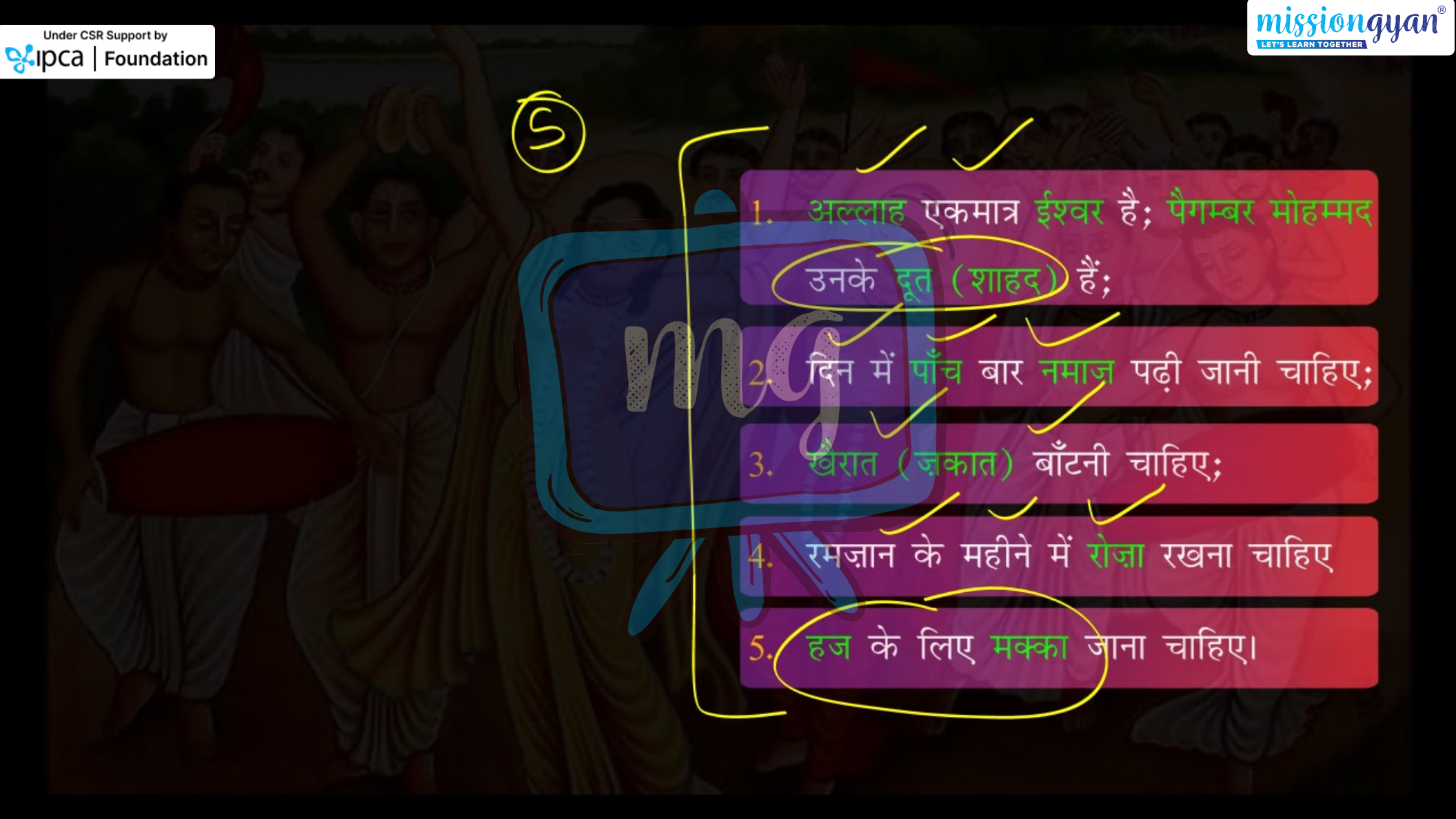
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

लोक प्रचलन में इस्लाम

इस्लाम के आगमन के बाद जो परिवर्तन हुए वे शासक वर्ग तक ही सीमित नहीं थे, अपितु पूरे उपमहाद्वीप में दूरदराज़ तक और विभिन्न सामाजिक समुदायों–किसान, शिल्पी, योद्धा, व्यापारी के बीच फैल गए। जिन्होंने इस्लाम धर्म कबूल किया उन्होंने सैद्धांतिक रूप से इसकी पाँच मुख्य 'बातें' मानीं :

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

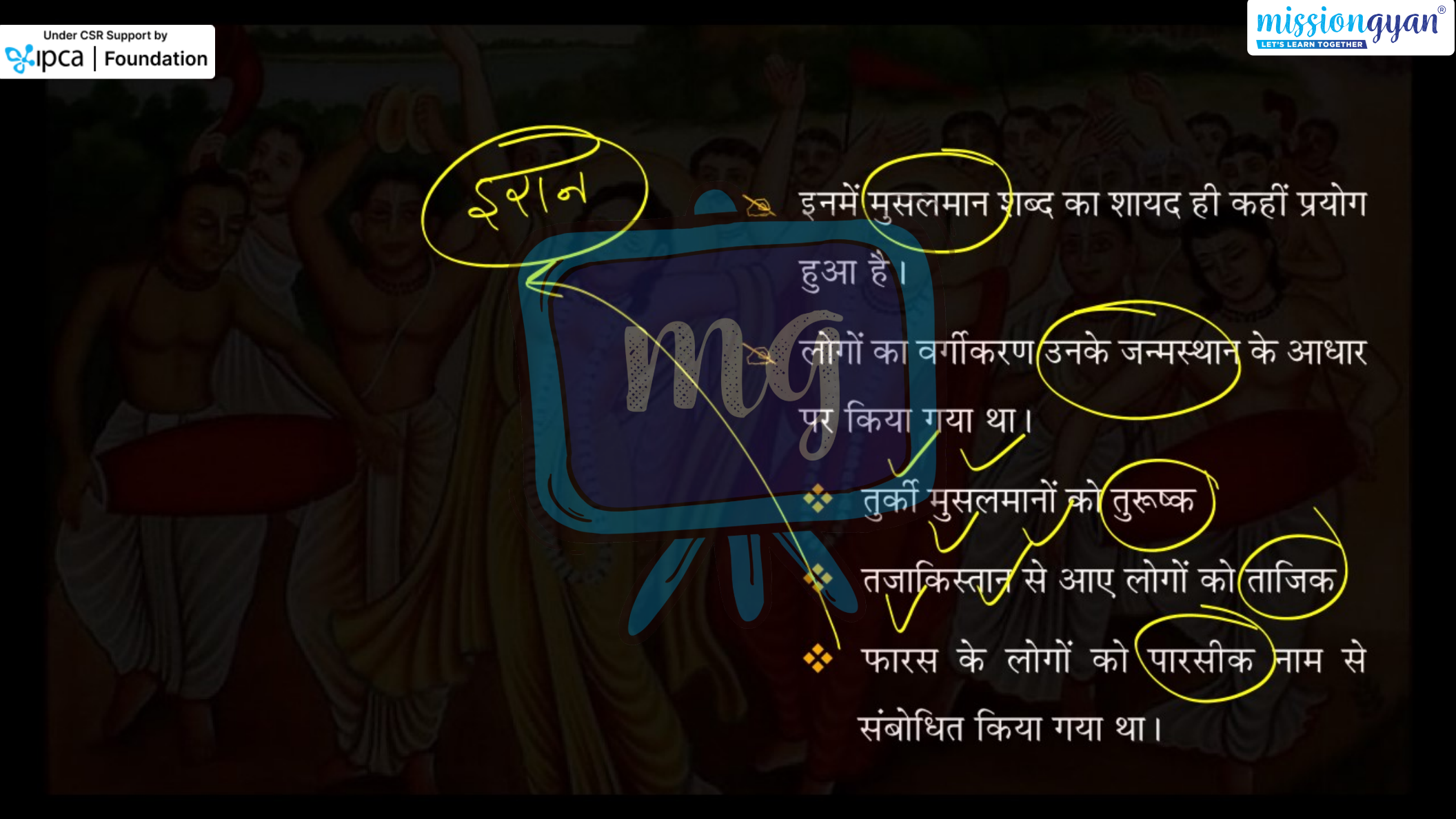
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

समुदायों के नाम

- हम अधिकतर हिन्दू और मुसलमान जैसे शब्दों को धार्मिक समुदायों का घोतक मान लेते हैं।
- किन्तु जिन इतिहासकारों ने आठवीं से चौदहवीं शताब्दी के मध्य संस्कृत ग्रंथों और अभिलेखों का अध्ययन किया है वे इस तथ्य को उजागर करते है कि-

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- इनमें मुसलमान शब्द का शायद ही कहीं प्रयोग हुआ है।
- लोगों का वर्गीकरण उनके जन्मस्थान के आधार पर किया गया था।
  - तुर्की मुसलमानों को तुरूष्क
  - तजाकिस्तान से आए लोगों को ताजिक
  - फारस के लोगों को पारसीक नाम से संबोधित किया गया था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

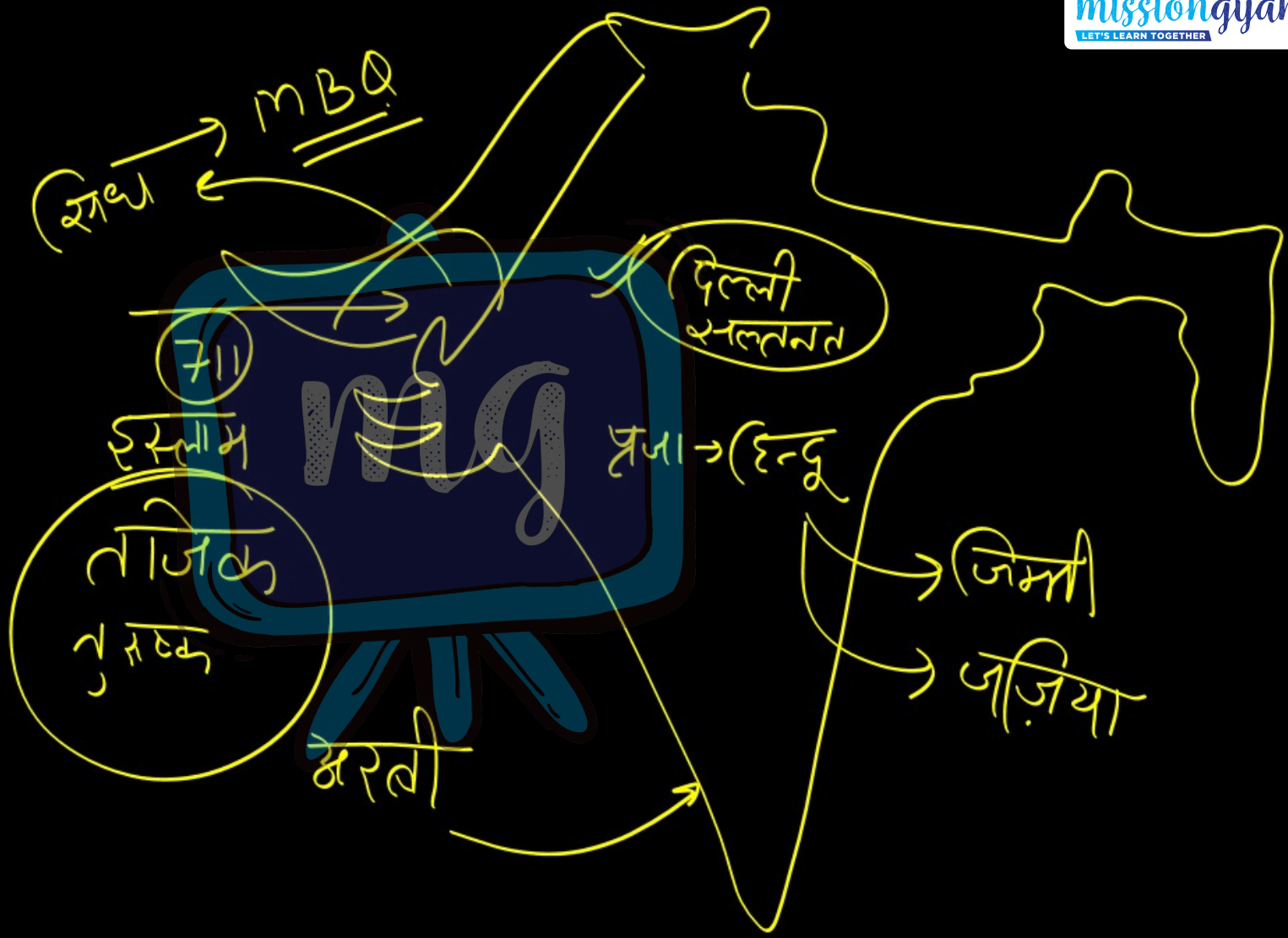
इन प्रवासी समुदायों के लिए एक अधिक सामान्य शब्द म्लेच्छ था।

म्लेच्छ :-

यह बात को इंगित करता है कि ये वर्ण व्यवस्था के नियमों का पालन नहीं करते थे। और ऐसी भाषाएँ बोलते थे जो संस्कृत से नहीं उपजी थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

